गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३६

प्राचीन पञ्जी

ग्राम, वंश आ सम्बन्धक पाठ

Decoding the Panji of Mithila · Volume 2

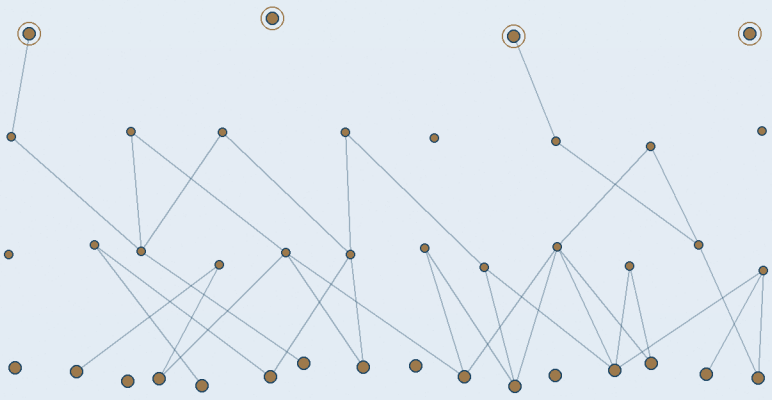

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह

ISSN 2229-547X

खण्ड ३६

प्राचीन पञ्जी : ग्राम, वंश आ सम्बन्धक पाठ

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

आधारग्रन्थ : Decoding the Panji of Mithila, Volume II

विदेह · प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

प्रकाशनाधिकार आ पाठस्रोत

मूल शोध-ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुर। सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार।

मूल ग्रन्थक उपलब्ध अधिकार-विवरण अनुसार © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर।

समीक्षाक आधार Decoding the Panji of Mithila क सम्बन्धित मूल ग्रन्थ अछि। पञ्जी-पोथीक प्राचीन तिरहुता छवि अथवा स्वतंत्र पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष प्रमाणपरीक्षण एहि संस्करणमे दावा नहि कएल गेल अछि।

जाल-पता : https://www.videha.co.in/

प्रतिरूप : https://videha-ejournal.github.io/videha/

अनुक्रमणिका

अध्याय १ — पञ्जी : स्मृति, अभिलेख आ सामाजिक मानचित्र.....6

अध्याय २ — ‘प्राचीन पञ्जी’क पाठ-संरचना : ग्राम सँ वंश धरि.....7

अध्याय ३ — सघन सूत्रक कठिनाइ : पाठालोचनाक मूल समस्या.....8

अध्याय ४ — पञ्जी-प्रविष्टिक न्यूनतम एकाइ आ प्रमाणक क्रम.....9

अध्याय ५ — सुत, सुता, सन्तति, अपत्य : सम्बन्ध-शब्दक बहुपद अर्थ...11

अध्याय ६ — ग्राम, वासी, डीह आ मूलग्राम : स्थानक बहुस्तरीय संकेत 13

अध्याय ७ — ‘सन्तति’ आ ‘अपत्य’ : वंशज आ तत्काल सन्तानक भेद15

अध्याय ८ — ‘सँ’क बहुअर्थी सम्बन्ध : व्याकरणसँ वंश-पठन धरि.....16

अध्याय ९ — कोष्ठकक संख्या : प्रमाण-संकेतक अनिश्चितता.....17

अध्याय १० — संक्षेप, उपाधि आ विद्वत्ताक परिवर्तित प्रतिष्ठा.....18

अध्याय ११ — पितृक्रम : नामक अनुक्रम आ प्रमाणित उतराधिकार.....19

अध्याय १२ — मातृक चक्र : एकरेखीय परिवार-वृक्षक प्रतिवाद.....20

अध्याय १३ — Marriage Records.....21

अध्याय १४ — Daughter’s-Son and Affinal Links.....23

अध्याय १५ — Multiple Marriages and Secondary Links.....25

अध्याय १६ — The Village Universe of Prachin Panji.....27

अध्याय १७ — Village Clusters and Migration.....29

अध्याय १८ — डीह, वासी, मूलग्राम, and Local Identity.....31

अध्याय १९ — Scholars, Poets, Priests, and Specialists.....33

अध्याय २० — Panji as Literary History.....35

अध्याय २१ — Panji as Social Structure.....37

अध्याय २२ — Panji and Time.....39

अध्याय २३ — How to Decode One Entry: A Demonstration.....41

अध्याय २४ — How to Decode a Village Cluster.....43

अध्याय २५ — How to Decode a मातृक चक्र.....45
अध्याय २६ — How to Decode a Marriage Entry.....47
अध्याय २७ — How to Decode a Long Dense Passage.....49
अध्याय २८ — Creating a Panji Family Tree.....51
अध्याय २९ — Creating a Village Index.....53
अध्याय ३० — Creating a Person Index.....55
अध्याय ३१ — Creating a Term Glossary.....57
अध्याय ३२ — Errors, Variants, and Editorial Discipline.....59
अध्याय ३३ — Volume II and the Khand 1 Index Protocol.....61
अध्याय ३४ — Khand 1 Master Structure and Chapter Link Map.....63
अध्याय ३५ — गोत्र, मूल, मूलग्राम: Index-Wise Decoding.....64
अध्याय ३६ — लौकित, चौगोला, श्रेणी, and पत्रांक Records.....66
अध्याय ३७ — विद्वान, गुरु-शिष्य, गोत्र-प्रवर, and बीजी पुरुष Records...68
अध्याय ३८ — Khand 1 Gramaarambh Coverage Checklist.....70

सम्पादकीय भूमिका

पञ्जीक व्याख्या करैत व्यक्ति, ग्राम, गोत्र, मूल, सन्तति, विवाह, मातृक आ उपाधिसूचक पद अलग-अलग पढ़ब आवश्यक अछि। मूल अंग्रेजी ग्रन्थक व्याख्या आ ऐतिहासिक पञ्जीक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष पाठ एकहि प्रमाणस्तर नहि। एहि समीक्षामे उपलब्ध मूल पुस्तकक दावाक तर्कसंगति, पाठ-विभाजन, प्रमाणक सीमा आ सामाजिक व्याख्याक औचित्य जाँचल गेल अछि।

पहिने स्रोतमे लिखल कथन, तकर बाद व्याख्यात्मक अन्वय, आ अन्तमे ऐतिहासिक अनुमान—ई क्रम निर्णायक अछि। पञ्जीक वंशस्मृतिसँ सामाजिक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि; मात्र एहि पाठमात्रसँ जैविक डीएनए-परीक्षणक प्रमाण नहि बनैत।

अध्यायवार मूल अध्ययन

अध्याय १ — पञ्जी : स्मृति, अभिलेख आ सामाजिक मानचित्र

आरम्भक अध्याय पञ्जीकेँ कथात्मक पारिवारिक इतिहाससँ अलग स्थापित करैत अछि। एक पाँतिमे वंश, ग्राम, विवाह, उपाधि आ सङ्केत एतेक सघन होइत अछि जे साधारण गद्यक पठन-नियम एकरा खोलि नहि सकैत। लेखकक ई प्रतिपादन उपयोगी अछि जे व्यक्ति आ स्थानक नाम स्वयंमे पूर्ण परिचय नहि, सम्बन्ध-समूहक नोड छथि। सामाजिक स्मृतिक एहि रूपकेँ आधुनिक जातीय पहचानक सरल तालिका बना देब पाठक संग अन्याय होयत।

पुस्तक पिता-पुत्रक क्रमक संग मातृक चक्र, दौहित्र आ वैवाहिक सन्दर्भक उपस्थिति देखबैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई आवश्यक अछि जे मातृक पाँतिक क्रियात्मक उपस्थिति आ महिलाक अपन अभिलेखीय प्रतिनिधित्वक बीच अन्तर राखल जाय। विवाह-व्यवस्थामे स्त्रीक भूमिकाक बिना वंशावलीक उपयोग अधूरा रहैत अछि; मुदा पुरुष-केन्द्रित अभिलेखक सीमा स्त्रीक इतिहासकेँ अपन स्वरमे नहि बतबैत अछि।

अध्यायक सर्वाधिक उपयोगी पक्ष सामाजिक नक्सा आ अभिलेख-नक्साक भेद खोलब अछि। पञ्जी ककरा याद राखलक, ककरा नहि, ई प्रश्न सामाजिक सत्तासँ जुड़ल अछि। एही कारणेँ एहि स्रोतक आधारेँ बनल ग्राम-जालकेँ मिथिलाक सभ समुदाय आ सभ घरक पूर्ण जनगणना नहि कहल जाएब चाही। अनुपस्थिति सेहो अनुसन्धानक प्रश्न अछि, स्वतः ऐतिहासिक अभावक प्रमाण नहि।

अध्याय २ — ‘प्राचीन पञ्जी’क पाठ-संरचना : ग्राम सँ वंश धरि

दोसर अध्याय ‘खण्ड १’ आ ‘प्राचीन पञ्जी’क उद्घाटन-शैली पर ध्यान दैत अछि। ‘अथ’ आ ‘ग्राम’ सन आरम्भिक पद पञ्जीक दस्तावेजी अभिविन्यास स्पष्ट करैत अछि : पाठ पहिने स्थान-समूह खोलैत अछि, तकर बाद व्यक्ति आ सम्बन्धक जाल। ई क्रम आधुनिक परिवार-वृक्षक उल्टा देखाइत अछि, किन्तु अभिलेखक अपन खोज-तर्क आ स्रोत-व्यवहारक अनुकूल अछि।

ग्रामकेँ खाली निवास-स्थान नहि, मूलग्राम, शाखागत स्थल आ वैवाहिक सम्बन्धक स्मृति-चिह्न मानल गेल अछि। तथापि एक नामक तीन अर्थ—जनमस्थान, प्रचलित ठाम आ वंशपरम्पराक पुरान आधार—सभ प्रसंगमे एकटा नहि होइत अछि। अध्यायक पद्धति तखने अधिक मजबूत होयत जखन स्थान-सूचक पदक निकटवर्ती सम्बन्ध-पदक संग पाठ-प्रमाण देल जाय।

एहि अध्यायक सम्पादकीय शिक्षास्वरूप ‘जतेक पाँति, ततेक कथा’क सरल निष्कर्षसँ बचल जाएब चाही। पञ्जीक लिखावट अभिलेखीय संक्षेप अछि; ओकर व्याख्यामे प्रयुक्त विस्तार प्रमाणित सम्बन्धक आधारपर सीमित रहबाक चाही। प्राथमिक देवनागरी पाँति, व्याकरणिक पदच्छेद आ सम्भाव्य अर्थ अलग प्रस्तुत करब अभ्यासकेँ परीक्ष्य बनओत।

अध्याय ३ — सघन सूत्रक कठिनाइ : पाठालोचनाक मूल समस्या

तेसर अध्याय ठीक प्रश्न उठबैत अछि : पञ्जीक कठिनाइ अव्यवस्था नहि, विशिष्ट अभिलेखीय विधासँ उत्पन्न होइत अछि। संक्षिप्त लेखनमे समान पद प्रसंग बदलिते भिन्न सम्बन्ध-सूचक भऽ सकैत अछि। ‘सन्तति’, ‘अपत्य’ अथवा ‘सँ’कँ आधुनिक सामान्य अर्थक सहारे एकही बेर खोलि देब सम्बन्धक गलत मानचित्र बनाबि सकैत अछि। लेखकक पाठ-इकाई अनुसार पठनक आग्रह एहि पुस्तकक पद्धतिगत आधार अछि।

सघन पाठक विस्तार करैत समय समीक्षककेँ तीन तह देखबाक चाही : मूल संकेत, निकटस्थ पाँतिक आधारपर सम्भावित व्याकरणिक सम्बन्ध आ तकर इतिहासलेखनक निष्कर्ष। जे ठाम पितृसम्बन्ध स्पष्ट अछि, ओतय स्पष्ट कहब; जे ठाम विवाह-सम्बन्ध सम्भाव्य अछि, ओतय ओहि सम्भावनाकेँ निर्णयक रूप नहि देब। ई अलगाव वंशावलीक शोधमे प्रमाणिकता बनबैत अछि।

एहि अध्यायक एक सम्भावित सीमा प्रशिक्षणक उदाहरणमे अछि। जँ उदाहरण मूल पाण्डुलिपिक सत्यापित पाँति नहि, बल्कि शिक्षणार्थ बनाओल व्याख्यात्मक रूप अछि, तँ ओकरा स्पष्ट चिह्नित करब आवश्यक अछि। पाठकेँ समझाबयवला कृत्रिम सूत्र आ वास्तविक मूल अभिलेख मिलि गेला पर पाठक बादमे ओही बनाओल वंशसम्बन्धकेँ तथ्य मानि सकैत अछि।

अध्याय ४ — पञ्जी-प्रविष्टिक न्यूनतम एकाइ आ प्रमाणक क्रम

चौठम अध्याय ‘The Basic Unit of a Panji Entry’ एकटा बड़ पद्धतिगत मोड़ अछि। पहिल तीन अध्याय पञ्जीक स्वरूप, प्राचीन अभिलेख आ पठनक कठिनाइक परिचय दैत छथि; आब लेखक ‘प्रविष्टि’केँ विश्लेषणक आधारभूत एकाइ मानैत छथि। अध्यायक आरम्भ स्पष्ट करैत अछि जे अभिलेखक पाँति आधुनिक वाक्य नहि, सम्बन्ध-सङ्केतक संक्षिप्त संरचना होइत अछि। आरम्भिक रूपमे पूर्वज, स्थान आ सम्बन्ध पर्याप्त लागि सकैत अछि; कखनो एहि एकाइमे संख्या, उपाधि, मातृक कड़ी आ शाखाक विस्तार सेहो जुड़ैत अछि। एहि भिन्नताकेँ स्वीकार कऽ पढ़ब शब्दार्थक सरलीकरणसँ बेहतर उपाय अछि।

प्रविष्टिक पदच्छेद करैत काल क्रम—मूल रूप, व्यक्ति, सम्बन्धसूचक शब्द, ग्राम वा मूलग्राम, संख्यात्मक चिन्ह आ अपूर्णता—सुरक्षित राखब चाही। ‘सँ’ सँ जुड़ल नामकेँ बिना संदर्भ देखनहि ‘अमुकक पुत्र’ बना देब स्रोतसँ अधिक कहि देब होयत। एही तरह क्रमांक वा कोष्ठककेँ हटेबासँ सम्भवतः दोसर पञ्जी-पृष्ठसँ जोड़निहार सूचक हेराइत अछि। लेखक ‘data must be enshrined before it is interpreted’क जे आग्रह करैत छथि, ओकर मैथिली रूप अभिलेखक अक्षर, क्रम आ सीमा प्रथम सुरक्षित राखू, तखन विवेचन करू—होयत।

अध्यायमे विस्तृत शिक्षण-उदाहरणक संग कमसँ कम तीन स्तरक प्रस्तुति उपयुक्त रहैत : यथालिखित पाठ, न्यूनतम सम्बन्ध-सारिणी आ सम्भाव्य गद्य-व्याख्या। एकटा वंश-पत्रमे एकहि नामक अनेक व्यक्ति रहि सकैत छथि; एहि लेल व्यक्ति-पहिचानक निर्णय केवल नामसँ नहि हो। जे ठाम स्रोतमे दू सम्भावित पदच्छेद अछि, दुनू पठनकेँ साक्ष्यक दर्जा अनुसार अलग करब चाही। लेखकक पद्धति एहि सम्भावनाकेँ स्वीकार करैत अछि; ई साहित्यिक अनुसंधानमे आलोचनात्मक संस्करण तैयार करबाक मजबूत आधार अछि।

पुस्तकक परवर्ती ग्राम-समूह, मातृक चक्र आ विवाह-संगतताक पुनर्निर्माण एहि आधार एकाइपर निर्भर अछि। अतः चौठम अध्यायक मूल्य एकटा परिभाषामे नहि, भविष्यक सम्पूर्ण अध्ययनक गलती रोकबाक अनुशासनमे अछि। एहि अनुशासनक कठोर कसौटी होयत : पाठक जँ मूल पाँति लेल फेर फाइल खोलथि तँ संपादित सारिणी सँ पाछाँ लौटनाइ संभव हो; कोनो अर्थनिर्णय मूल पाठकेँ दबा नहि दे।

अध्याय ५ — सुत, सुता, सन्तति, अपत्य : सम्बन्ध-शब्दक बहुपद अर्थ

पाँचम अध्याय ‘Key Relationship Words’ पञ्जी-व्याकरणक केन्द्रमे सम्बन्धसूचक शब्दसभकेँ राखैत अछि। सुत, सुतो, सुता, सन्तति, अपत्य, पौत्र, प्रपौत्र, दौहित्र, मातृक आ चक्रक साथेँ भ्राता आ अपरा सन पदक अध्ययन होइत अछि। एही शब्दसँ पाठक तय करैत छथि जे अगिला नाम सीधा वंश-अवरोहक बिन्दु अछि, कन्याक माध्यमसँ बनल सम्बन्ध अछि अथवा कोनो दोसर शाखाक संकेत। सामान्य संस्कृत अर्थ आ पञ्जीमे विशेष व्यवहार सदैव एक नहि; लेखक एहि सावधानीक विस्तार करैत छथि।

‘सन्तति’ वा ‘अपत्य’क अर्थ देखिते प्रमाणित पिता–पुत्रक सीधी रेखा बनि गेल—एहन अनुमान अध्याय रोकैत अछि। एकटा मूलपुरुषसँ सम्बन्धित शाखा कतेको मध्यस्थ पीढ़ी पार कऽ अभिलेखमे एक संग उपस्थित रहि सकैत अछि। तेँ सीधा जैविक पुत्र, व्यापक वंशज, स्मृत शाखा आ विवाह-सम्बन्धक कड़ी लेल अलग संकेत उचित अछि। जे ठाम संक्षेप-अक्षर अछि, ओतय पूर्ण रूप सम्भावित अछि, प्रमाणित नहि। एहन बुनियादी अलगाव आधुनिक डिजिटल वंशचित्रमे भ्रामक अभिभावक-कड़ी जोड़बाक जोखिम घटबैत अछि।

अध्यायक लैङ्गिक अर्थ सेहो उल्लेखनीय अछि। ‘सुता’ आ ‘दौहित्र’ वंशजालमे स्त्रीक माध्यमसँ चलैत मार्गक साक्ष्य दैत अछि; मुदा एतयसँ महिला आ पुरुष समान अधिकारक संरचना स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। जे समाज स्त्रीकेँ मातृसम्बन्धक अनिवार्य कड़ी मानैत रहल, ओ समाज स्त्रीक स्वतंत्र जीवनवृत्तान्त कतेक सुरक्षित रखलक—ई फराक शोधप्रश्न अछि। शब्द-व्याकरणक आलोचना तखन साहित्यिक-सामाजिक इतिहास बनैत अछि जखन संबंधक दस्तावेजी भूमिका आ व्यक्तिक सामाजिक स्थिति दुनू देखल जाए।

एहि अध्यायक पाठशास्त्रीय उपलब्धि ई अछि जे पदान्तर, पीढ़ी-गणना आ शाखागत सम्बन्धकोणकेँ यथासम्भव निश्चयपूर्वक अलग रखबाक आग्रह

करैत अछि। व्यवहारमे एकटा छोट सम्बन्ध-तालिका, मूल वर्तनीसहित साक्ष्य-सङ्केत आ चिन्हित अनिश्चितता एहि विचारकेँ जाँच-योग्य बना सकैत अछि। एहि आधारपर नवप्रवेशी पाठक प्राचीन पञ्जीकेँ केवल नामक फेरिस्त नहि, सम्बन्धात्मक लेखन-पद्धति मानि पढ़ि सकैत छथि।

अध्याय ६ — ग्राम, वासी, डीह आ मूलग्राम : स्थानक बहुस्तरीय संकेत

छठम अध्याय ‘Village Formulae and Settlement Markers’ पञ्जीकेँ स्थानिक इतिहासक अभिलेख बनबैत अछि। ग्राम, वासी, डीह, मूलग्राम, तत्रैव, समेत, एते, अथ, अपरा आ सँ सन पद सभ स्थल-सूचक अवश्य अछि, मुदा सभ शब्द एकै अर्थमे नहि चलैत अछि। ‘अथ ... ग्राम’ कखनो नव प्रविष्टि-समूहक उद्घाटन करैत अछि; ‘डीह’ पुरान बासस्थानक स्मृतिक प्रश्न उठबैत अछि; ‘वासी’ कखन निवासक चिन्ह अछि आ कखन पहचानक उपाधि, ई वाक्यक सम्पूर्ण ढाँचा देखलाक बाद बुझाइत अछि।

प्राचीन पञ्जीक भूगोल आजुक जिला-सीमा वा मानचित्रसँ सदा मेल नहि खायत। ग्रामनामक पुनरावृत्ति, परिवर्तित उच्चारण, एकहि ठामक अनेक नाम आ भिन्न ग्रामक नामसाम्य—एहि सभसँ वंशक पुनर्निर्माण प्रभावित होइत अछि। एकटा स्थानसूचक शब्दकेँ ‘प्रवास’क निश्चित इतिहास मानि लेब कठिनाइ उत्पन्न करैत अछि, किएक तँ विवाह-घर, मूल-सम्बन्ध आ वास्तविक निवासक कारणेँ सेहो स्थान उपस्थित भऽ सकैत अछि। एहि अर्थमे पुस्तकक स्थान-सन्दर्भ सावधानी पढ़बाक पाठ अछि।

‘सँ’क प्रयोग सर्वाधिक सावधानी माँगैत अछि। एकहि अभिलेखमे ई स्रोत, दिशा, पत्नी-घरक कड़ी वा शाखाक सदस्यतासँ सम्बन्धित भऽ सकैत अछि। अतः ग्रामक नाम देल रहला पर सेहो सम्बन्धक प्रकार एखन स्थापित नहि मानल जाए। समीक्षा लेल सारणीमे मूल पद, निकटस्थ नाम, सम्बन्धक अनुमान, निश्चितता-स्तर आ मूल स्रोतक पृष्ठ—पाँचू अलग बिन्दु आवश्यक अछि। एना एकटा ग्राम-जाल तैयार होयत जकर प्रत्येक कड़ी पाछाँ जाँचल जा सकत।

अध्याय ४क प्रविष्टि-इकाइ आ अध्याय ५क सम्बन्ध-व्याकरण एतय आ स्थानक भूगोल एक संग भऽ जाइत अछि। ई तीनू अध्याय मिला कऽ प्राचीन पञ्जीक पाठसँ सामाजिक मानचित्र धरि पहुँचबाक निश्चित पद्धति

दैत अछि। तथापि ई मानचित्र सम्पूर्ण मिथिलाक जनगणना नहि, स्रोतमे दर्ज परिवारसभक चयनित स्मृति अछि। जे समूह पञ्जीमे दर्ज नहि, हुनकर अनुपस्थितिक अर्थ स्रोतक सीमासँ बाहर कल्पित नहि करबाक चाही।

अध्याय ७ — ‘सन्तति’ आ ‘अपत्य’ : वंशज आ तत्काल सन्तानक भेद

सातम अध्याय दूनू शब्दक अर्थ-संभावनाकेँ अलग विवेचन देबैत अछि। ‘सन्तति’क अर्थ प्रत्येक बेर सीधा सन्तान नहि; ई वंशक निरन्तरता वा उपशाखाक स्मृति सेहो भऽ सकैत अछि। ‘अपत्य’क अर्थक सीमा सेहो प्रसंगसँ तय होइत अछि। एहि कारण अविकसित वंशसूचीमे शब्दक अनुवाद लिखि तुरंत पिता–पुत्रक कड़ी जोड़ब गंभीर पाठत्रुटि होयत।

सम्बन्धसूचक पदक संग ग्रामचिह्न आ परिवारक पुनरावृत्ति मिलला परहि वंशक्रमक निष्कर्ष मजबूत होइत अछि। शब्दार्थक शिक्षणक एहि अध्यायकेँ हर उदाहरणक मूल पृष्ठ आ पार्श्ववर्ती पाँति संग राखल जाए तँ डिजिटल अभिलेख निर्माण लेल उपयोगी नियमावली बनि सकैत अछि।

“For example, if an entry says that the सन्तति of a named person is linked to a village, the text may be preserving the fact that the branch continued there.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

“Sometimes a descent or offspring marker appears beside a title-bearing person.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

अध्याय ८ — ‘सँ’क बहुअर्थी सम्बन्ध : व्याकरणसँ वंश-पठन धरि

आठम अध्याय छोट शब्द ‘सँ’केँ पञ्जीपठनक मुख्य सम्बन्ध-सूत्र ठहरबैत अछि। ‘सँ’ एक ठाम ग्रामसँ सम्बन्ध, दोसर ठाम विवाह-मार्ग, आ कखनो वंशज वा शाखागत सम्बन्ध जनबैत अछि। एकर अंग्रेजी ‘from’ अनुवाद मात्रसँ चलि पड़ला पर नव पीढ़ी अथवा स्थानान्तरक असत्य कड़ी बनि सकैत अछि।

एहि अध्यायक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे व्याकरणकेँ अभिलेखीय तर्कसँ जोड़ैत अछि। ‘सँ’क बामा-दहिना उपस्थित पदक क्रम आ पुनरावृत्ति देखबाक नियम जँ व्यवस्थित सारिणीमे लागू हो, तँ ग्राम-क्रम, मातृक सम्बन्ध आ शाखागत पहिचानमे भ्रम घटत।

“In marriage entries, “सँ” often links one house with another.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

“When a titled person is linked with a place through “सँ,” the entry may preserve both intellectual status and geographical identity.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

अध्याय ९ — कोष्ठकक संख्या : प्रमाण-संकेतक अनिश्चितता

नवम अध्याय कोष्ठकमे लिखल अंकक स्वरूप आ संभावित कार्यक वर्गीकरण करैत अछि। अंक पृष्ठसूचक, शाखासूचक, वैवाहिक सम्बन्धक परिचायक अथवा दोसर प्रकारक संदर्भ हो सकैत अछि; परन्तु प्रत्येक अंकक आशय एकसमान मानल नहि जा सकैत अछि। एखन अर्थ स्पष्ट नहि हो तँ मूल अंक जकाँ लिखल अछि से सुरक्षित राखल जाए।

ई अध्याय अभिलेखीय अर्थनिर्णयमे संयमक उदाहरण अछि। अंकक स्थिति, तकर आगूक शब्द आ दोसर प्रविष्टिमे समान संकेत खोजि परिकल्पना बनाओल जाए; कोष्ठक हटाएब वा अर्थ बुझबा लेल स्वतः संख्या बदलि देब शोधविरुद्ध अछि।

“The first rule is exact preservation. If the source writes (२२७//०४), the editor must preserve the double slash. If the source writes (८७/०), the zero must remain. If the source writes (११०/०७ टीप), the word टीप must remain attached. If the number appears before a name…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

“Numbers may appear beside सुत, सुतो, सुता, पौत्र, प्रपौत्र, सन्तति, अपत्य, or दौहित्र phrases.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

अध्याय १० — संक्षेप, उपाधि आ विद्वत्ताक परिवर्तित प्रतिष्ठा

दसम अध्यायक आरम्भमे उपाधि केवल शिष्टाचार नहि, नाम-पहिचान आ सामाजिक स्तरक अभिलेखीय संकेत अछि। महामहोपाध्याय वा अन्य विद्योपाधि व्यक्तिक सामाजिक मान्यता जनबैत अछि; मुदा ओहि पदवीसँ ओकर सम्पूर्ण जीवन-वृत्तान्त स्वतः नहि बनैत अछि। एकहि संक्षेपक विस्तार अलग ग्रामसमूहमे बदलि सकैत अछि।

पञ्जीकेँ साहित्यिक आ विद्वत् इतिहासक आधार बनबैत काल उपाधि, व्यक्ति, ग्राम, पिता-सन्तति आ कालचिह्नक मिलान अनिवार्य अछि। संक्षेपक एकटा सम्भावित पूर्ण रूपक संग स्रोतक अक्षर सुरक्षित राखि विकल्पो बताओल जाए।

“For example, a person marked as महामहोपाध्याय or म. म. belongs to a different evidentiary class from a person with the same name but no title.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

“The Panji also preserves specialist titles connected with textual, ritual, and philosophical traditions. पौराणिक suggests Purana learning or narration. मीमांसक points to Mimamsa scholarship. अग्निहोत्रिक indicates ritual fire-related identity or sacrificial practice.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

अध्याय ११ — पितृक्रम : नामक अनुक्रम आ प्रमाणित उतराधिकार

एगारहम अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे वंशसूचीमे पुरुषनामक लगातार उपस्थिति स्वयंसिद्ध पिता-पुत्र सम्बन्ध नहि। ‘सुत’, ‘पुत्र’, ‘पौत्र’क व्याकरणक संग सम्बन्धक क्रम पढ़बाक अछि। पञ्जीक जटिल शाखामे कतेको पीढ़ी एकसाथ संक्षेपित भऽ सकैत अछि।

ई अध्ययनक उपयोग पितृवंशक पुनर्निर्माणमे अछि, मुदा मातृक सम्बन्धक अनुपस्थितिकेँ प्रमाणित शून्यता मानब नहि चाही। प्रत्येक सम्बन्धक संग स्रोत-पाँति, वैकल्पिक पठन आ जोड़निहार प्रतीक रखल जाए।

“A phrase containing प्रपौत्र, पौत्र, and पुत्र may give a four-generation structure.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

“The paternal line in the Panji is almost always tied to place.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

अध्याय १२ — मातृक चक्र : एकरेखीय परिवार-वृक्षक प्रतिवाद

बारहम अध्याय मातृक चक्रक माध्यमसँ विवाहद्वारा बनल परिवार-सम्बन्धकेँ अलग पाठन-क्षेत्र बनबैत अछि। कन्याक घर, पुत्रीक सन्तति आ विवाहक चक्र पितृवंशक उपशाखा मात्र नहि; ई स्वतंत्र सम्बन्ध-सूत्र देबैत अछि। एहि कारण एकरेखीय वंशचित्र पञ्जीक समग्र सामाजिक भूमिति प्रस्तुत नहि कऽ सकैत अछि।

मातृक सूत्रक पुनर्निर्माणमे नामक पुनरावृत्ति, विवाहक क्रम आ ग्राम-पहिचानक अनेक स्तर देखबाक चाही। मूल पाठमे जतेक स्पष्ट अछि, ओकरासँ आगाँ समाजवैज्ञानिक अनुमान अलग पहचानल जाए।

“A maternal relation may arise through a mother, daughter, wife, daughter’s son, marriage house, or affinal branch.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

“A modern reader may notice that women are not always named in the same way as men.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

अध्याय १३ — Marriage Records

विवाह सम्बन्धी अध्याय पञ्जीकेँ पितृवंशक एकल रेखासँ बाहर अनैत अछि। ‘विवाह’ शब्द जखन दू घरक बीच सम्बन्ध बनबैत अछि, तखन दुलहिनक मूलग्राम, दूल्हाक वंश आ प्रविष्टिमे प्रयुक्त ‘अपरा’क स्थान अलग-अलग निर्धारित करबाक अछि। एकहि विवाह-सूत्रसँ घरक स्थायी प्रवास अथवा सम्पूर्ण वैवाहिक इतिहास निपटाओल नहि जा सकैत। लेखकक व्याख्यात्मक उपयोगिता सम्बन्धक प्रकार स्पष्ट कएलामे अछि; प्रमाणक सीमा प्रत्येक नामक बगलमे लिखल मूल शब्दसँ बँधल रहत।

सपिण्ड-पीढ़ी वा स्वजनक गणना करत समय गिनतीक आरम्भ आ पिता-माताक मार्ग स्पष्ट रहल चाही। गणना स्रोतक व्यक्तिपहिचान पर निर्भर अछि; गलत पहचान ऊपर शुद्ध गणित लगौने सही इतिहास नहि बनैत अछि।

स्त्रीक संलग्न परिवार आ ओकर स्वतंत्र जीवनवृत्तान्त अभिलेखमे अनिवार्यतः एकरूपेँ सुरक्षित नहि अछि। अतः विवाह-श्रेणीक आलोचना सामाजिक व्यवस्थाक इतिहास पर केन्द्रित रहय, व्यक्ति-चरित्र पर नहि।

“विवाह means marriage. In the Panji, the word usually marks a formal marriage record, not a casual biographical detail. When it appears after the name of a person, often with a title such as ठo, the entry identifies a marriage event or marriage-context connected with that…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

“If a marriage entry is followed by or associated with a दौहित्र entry, the two should be studied together.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

विवाह-सूचक पद पञ्जीक सामाजिक तन्तुक एकटा प्रत्यक्ष संकेत अछि। एकरा नितान्त व्यक्तिगत विवाहक वर्णन बुझब अधूरा होयत; बहुत बेर ई मूलक भीतर विवाह-मार्ग आ मातृक जालक सम्बन्ध निर्धारित करैत अछि। नामक जोड़, घटना-पुष्टि आ विवाहयोग्यताक पूर्व-निर्णयकेँ एकहि कोटिमे नहि मिलायब चाही।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय १४ — Daughter’s-Son and Affinal Links

‘दौहित्र’क पाठ पञ्जीमे स्त्री-पक्षकेँ हेरायल किनारासँ फेर केन्द्रीय स्थानपर अनैत अछि। मुदा ‘पुत्रीक पुत्र’ आ ‘नव पितृवंशक सदस्य’ एकहि अभिलेखीय विधान नहि। दौहित्रक उल्लेख कोनो पितृवंशमे कियैक आएल अछि, से व्याख्या तखनहि सम्भव जखन पिता, माता, विवाहग्राम आ प्रसंगक स्थान अलग चिन्हित हो। एहि अध्यायक मौलिक आलोचनात्मक प्रश्न स्त्रीक सम्बन्धद्वारा वंशस्मृति कतेक सुरक्षित अछि, आ कतेक मात्र नामसूचक अवशेष रहल अछि।

एहि अध्यायक पाठमे स्त्री सम्बन्धक उपस्थितिसँ शक्ति-संरचनाक प्रश्न उठैत अछि। मुदा वर्तमान नैतिक मानदण्डक भाषामे पुरान व्यक्तिपर दोष देबाक बदला नियम आ संस्थागत वर्गीकरणक समीक्षा महत्त्वपूर्ण अछि। स्त्रीक नामक अभिलेखीय स्थान एकरेखीय पुरुषवंशक संरचनासँ भिन्न सामाजिक मार्ग देखबैत अछि। मातृक सम्बन्ध, कन्याक विवाह आ दौहित्रक कड़ीकेँ एकहि कोटिमे नहि मिलायब चाही।

“A daughter’s-son relation is often the later consequence of a marriage.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

“The village gazetteer must therefore include place function.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

दौहित्रक उल्लेख पितृवंशक शाखासँ बाहरक स्मृतिपथ खोलैत अछि। ससुराल, मातृक ग्राम, भगीनेय, सुता आ विवाह-सूत्रक परस्पर उपस्थितिसँ बहुपार्श्वीय जाल बनैत अछि; मुदा प्रत्येक शब्दक समानार्थक रूपमे प्रयोग गलत होयत। आलोचनाक लक्ष्य स्त्रीकेँ केवल ‘दू परिवारक जोड़’ बना देबाक प्रवृत्तिक परीक्षण अछि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय १५ — Multiple Marriages and Secondary Links

बहुविवाहक उपस्थिति वंश-चित्रमे मात्र अतिरिक्त शाखा नहि जोड़ैत; ई मातृक चक्रक मार्ग, समवयस्क सन्ततिक स्थितिक अनुमान आ विवाहसम्बन्धक अधिकार-पाठ बदलैत अछि। ‘अपरा’क एकल अर्थ ठहराएब असुरक्षित अछि, कारण ओ अनेक प्रसंगमे दोसर शाखा वा दोसर सम्बन्धक सङ्केत भऽ सकैत अछि। प्रत्येक विवाहक बाद सम्बन्धित सन्तान आ भिन्न मातृपक्ष अलग पाँतिमे देखाओल जाए तँ पूर्वज-गणना जाँचयोग्य बनत।

विवाहक उल्लेख सामाजिक विधिकता, कुटुम्ब-सम्बन्ध आ वैवाहिक घटनाक तीन तरहक सूचना देब सकैत अछि। नियम, व्यक्तिगत घटना आ पञ्जीकारक वर्गीकरणकेँ एकहि अर्थ नहि देबाक चाही।

सपिण्ड-पीढ़ी वा स्वजनक गणना करत समय गिनतीक आरम्भ आ पिता-माताक मार्ग स्पष्ट रहल चाही। गणना स्रोतक व्यक्तिपहिचान पर निर्भर अछि; गलत पहचान ऊपर शुद्ध गणित लगौने सही इतिहास नहि बनैत अछि।

“The first marriage may be followed by issue, numbers, villages, and later branches.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

“Daughter’s-son entries become more complex when multiple marriages are present.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

मूल पाठमे प्रथम आ द्वितीय विवाहक पृथक् चिह्नक उदाहरण अछि। एहि क्रमकेँ हटाएबासँ सन्ततिक मातृक सम्बन्ध आ विवाह-निषेधक तर्क बदलि सकैत अछि। मुदा दोसर विवाहक कारण, पहिले विवाहक अन्त अथवा सम्बन्धित स्त्रीक अनुभव मूलमे नहि लिखल तँ ओकर कथा आलोचक बनाबथि नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो

हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय १६ — The Village Universe of Prachin Panji

ग्रामक विवेचनमे ‘डीह’, ‘वासी’ आ ‘मूलग्राम’केँ एकहीं स्थानसूचक श्रेणी बनाओलासँ पञ्जीक भूगोल सपाट बनि जाएत। मूलग्राम पूर्वज-स्मृतिक चिह्न भऽ सकैत अछि, वासी तत्कालीन निवासक, आ डीह जमीन अथवा पुरान बसोबासक भिन्न ध्वनि आनैत अछि। लेखक ग्रामकेँ अभिलेखीय चौखट मानैत छथि; आलोचना एहि चौखटक भीतर लिखल भूमिका-जालकेँ फेर खोलैत अछि।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“A village name may function as a frame.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

“Many entries contain several places in one compact phrase.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

प्राचीन पञ्जीक आरम्भिक ग्राम-रचना ई स्पष्ट करैत अछि जे व्यक्ति केवल पिता-सन्तति क्रममे नहि, परम्परागत स्थानसँ सेहो सम्बद्ध छथि।

ग्रामसूचक चिह्नक पाठमे मूलस्थान, विवाहसम्पर्क आ उत्तरवर्ती निवासक भेद आवश्यक अछि। ग्रामकोश बनबैत कोनो पुनरुक्त ग्रामनामकेँ बिना परीक्षण एकहि भौगोलिक स्थानसँ न जोड़ल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो

हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय १७ — Village Clusters and Migration

ग्राम-समूह आ प्रवासक अध्याय नक्शाक मोहसँ सावधान करैत अछि। सरिसब, उजान, मंगरौनी सन स्थान एकहि पाठपरिसरमे आयब सामाजिक सम्पर्कक सङ्केत अछि; एकरासँ यात्रा-पथक दिशा, समय आ कारण स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। विवाहसम्बन्धी दू ठामक उल्लेखकेँ स्थायी स्थानान्तरण मानल गेल तँ ऐतिहासिक नक्शा भ्रामक बनत। लेखकक समूह-विश्लेषणकेँ चरणबद्ध प्रमाण-मानचित्र बनेबा योग्य रूपमे विकसित कएल जा सकैत अछि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“A village cluster is a group of entries organized around a place-frame or closed by a place formula.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

“Branch dispersal occurs when descendants or associated lines of one ancestor appear across multiple places.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

‘अथ’सँ ‘एते’ धरि खण्डक सीमाक परम्परा ग्रामसमूहक पाठमे महत्त्वपूर्ण संकेत अछि। लेखक जे ग्रामक अनेक जोड़ी जोड़ैत छथि से स्थायी बसोबासक सूची होबऽ जरूरी नहि; शाखा आ वैवाहिक सम्पर्कक मार्ग सेहो हो सकैत अछि। ई अध्यायक ऐतिहासिक मूल्य अनिश्चितताकेँ बिना मिटओने भौगोलिक संरचना खोलबामे अछि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो

हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय १८ — डीह, वासी, मूलग्राम, and Local Identity

डीह–वासी–मूलग्रामक भेद स्थानीय पहिचानक बहुस्तर खोलैत अछि। विवाहक प्रसंगमे ‘कहाँक’ प्रश्न जन्मस्थान, मूल-वर्ग, ससुराल वा तत्कालीन बासक हो सकैत अछि। एहि कारण एकटा आधुनिक भौगोलिक पतेमे सभ अभिलेखीय संकेत समेटब अनुचित। ग्रन्थमे स्थानसूचक संख्यासभ सेहो चर्चा पबैत अछि; तकर प्रसंग पहचानल बिना ओ सभ वर्ष, दूरी वा पीढ़ीक संख्या नहि मानब।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“A डीह reference can help study movement, but it does not by itself prove migration.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

“Marriage can create local identity. A person may be linked to a village through spouse-side relation. A daughter may marry into a village; a daughter’s son may be remembered through that village; a second marriage may create another village link. These are local identities, but not…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

एहि तीन पदकेँ समान ‘ग्राम’ कहला पर मूल अभिलेखक वंशगत तर्क नष्ट होइत अछि। ‘डीह’ पूर्वस्मृतिक, ‘वासी’ उपस्थित निवासक आ ‘मूलग्राम’ वंशगत मूलक चिन्ह हो सकैत अछि; मुदा वास्तविक अर्थ प्रत्यक्ष पाँतिक प्रसंगपर निर्भर अछि। शब्दकोशमे स्थिर परिभाषाक संग अपवाद-पठन राखब आवश्यक अछि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय १९ — Scholars, Poets, Priests, and Specialists

विद्वान, पुरोहित आ विशेषज्ञक उल्लेख मिथिलाक बौद्धिक इतिहास लेल महत्त्वपूर्ण प्रवेशद्वार अछि। ‘महामहोपाध्याय’ वा ‘कवि’ सन उपाधि किसीक अभिलेखीय प्रतिष्ठा बतबैत अछि; तकर सम्पूर्ण कृतिसूची अथवा विशेष ग्रन्थक लेखकीयता अपने-आप सिद्ध नहि करैत। आलोचना नाम–उपाधि–स्थान–समकालीन कृतिसाक्ष्यक चारि अलग स्तम्भ बनबैत अछि। एहि बिना प्रसिद्ध समाननामक व्यक्तिसभक गलत अभिन्नता इतिहाससँ मिथक बनि सकैत अछि।

ज्ञानक प्रतिष्ठा, परिवारक वंशक्रम आ वैवाहिक सम्बन्ध एकहि पाँतिमे भेटि सकैत अछि। एहि तीनूकेँ अलग दर्ज कएलासँ मिथिलाक बौद्धिक इतिहासक ओ रूप देखाइत अछि जे आधुनिक जीवनीमे हेरा जाइत अछि।

नामक दोहराव आ सम्मानसूचक शब्दक अनिश्चितता कारण साहित्यिक इतिहासक निष्कर्ष सावधान रहबाक चाही। लेखकीय पहचानकेँ मूल ग्राम वा वंशमूलक समानतासँ मात्र निश्चित नहि मानल जाए।

“For example, a person marked महामहोपाध्याय or म.म. stands in a learned-title environment.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

“The Panji also preserves priestly memory through terms connected with पुरोहित, ritual identity, and learned Brahmanical function.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

कविराज, वैयाकरण, महामहोपाध्याय आ कर्मविशेषक पदवी पञ्जीकेँ ज्ञानपरम्पराक असामान्य अभिलेख बनबैत अछि। मुदा एहन उपाधि विशिष्ट व्यक्तिक रचित पुस्तकक स्वतः प्रमाण नहि। समनामधारी विद्वानक अलग-अलग शाखाक सम्भावना सेहो बचाए रखनाइ चाही।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २० — Panji as Literary History

साहित्यिक इतिहासक प्रश्नमे पञ्जी कखनो लेखकक ग्रन्थनाम नहि, केवल विद्वत्-उपाधि सुरक्षित राखैत अछि। एहन मौनकेँ हरायल पाण्डुलिपिक निश्चित साक्ष्य कहब अनुचित अछि। यद्यपि विद्वत् घरक ग्रामविस्तार, गुरु-परम्परा आ सामाजिक सम्मान साहित्यिक संस्थाक अनुमान लेल उपयोगी संकेत अछि, प्रत्येक विशिष्ट रचनाक लेखकीयता अलग पाठ-साक्ष्य माँगैत अछि। ई विवेचन पञ्जी आ साहित्येतिहासक बीच उपयुक्त आलोचनात्मक दूरी बनबैत अछि।

आनुवंशिकीक उपमान पञ्जी अभिलेखक वैज्ञानिक उपयोगक सम्भावना सुझबैत अछि; मुदा वास्तविक जीनोम-संशोधन लेल स्वतंत्र जैविक नमूना आ सहमतिक परीक्षण आवश्यक अछि। लिखित वंशजालकेँ प्रयोगशाला-सिद्ध आनुवंशिकी नहि कहल जा सकैत अछि।

ग्रन्थक दीर्घ समय-सीमा वंशस्मृतिक विस्तार बतबैत अछि; प्रत्येक पाँतिक भौतिक लेखन-तिथि ताहिसँ प्रमाणित नहि होइत अछि। मौखिक परम्परा, संकलन, नकल आ आधुनिक व्याख्या फराक समयगत स्तर अछि।

“A कविराज may appear inside a village cluster, a branch list, or a long descent passage.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

“A daughter’s son may connect two learned houses.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

‘कवि’ वा ‘कविराज’क उपस्थिति साहित्यक सामाजिक प्रतिष्ठा देखबैत अछि, मुदा रचना, पाठपरम्परा आ प्रकाशनक इतिहास स्वतन्त्र स्रोत माँगैत अछि। लेखक एहि संकेतसभकेँ साहित्यिक इतिहासक प्रवेशद्वार बनबैत छथि; आलोचककेँ संकेतसँ तथ्य धरि पहुँचबाक मध्यवर्ती प्रमाण शृंखला देखेबाक अछि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो

हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २१ — Panji as Social Structure

अध्याय समाजक बनावटकेँ व्यक्तिसँ घर, घरसँ ग्राम, आ ग्रामसँ वैवाहिक समूह धरि पढ़ैत अछि। एहिमे पञ्जी अभिलेख आ सामाजिक नियम दुनूक संग काम करैत अछि। मुदा स्रोतक स्थान-सूत्रकेँ आधुनिक जनसांख्यिकीय अनुपात बनब अनधिकृत छलाङ होयत; कतबा परिवार दर्ज नहि भेलाह, ई प्रश्न मूल पञ्जी स्वयं नहियो बता सकैत अछि।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“Descent is central to social structure. The Panji preserves who descends from whom, but it also shows that descent alone was not enough. A branch could carry rank, learning, office, residence, and marriage prestige. Titles such as ठाकुर, महामहोपाध्याय, कविराज, वैयाकरण, पण्डित, धर्माधिकारी, and बाबू show…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“A महामहोपाध्याय marks high learning. A कविराज marks literary prestige. A वैयाकरण marks grammatical specialization. A धर्माधिकारी marks legal-ritual authority. A ठाकुर or बाबू may mark social rank or later status. These are not ornaments; they are social facts.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“Panji as Social Structure” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २२ — Panji and Time

पञ्जीमे कालक्रम सदिखन वर्षाङ्कसँ नहि, पूर्वज-पुत्र-उत्तरपुरुषक आपसी क्रमसँ बनैत अछि। ई सापेक्ष काल आधुनिक तिथि नहि अछि। पितृनामक बीच पीढ़ी छुटि सकैत अछि; एकहि नाम पुनः आबि सकैत अछि। एकरा दिनाङ्कयुक्त इतिहास बनेबा लेल स्वतंत्र अभिलेख आवश्यक अछि।

राजकीय आरम्भक कथा, सामाजिक व्यवस्था आ अनुमानित कालक्रम एकहि अर्थक ‘समकालीन इतिहास’ नहि अछि। उपलब्ध पाठमे जे लिखल अछि ओकर विशिष्ट प्रमाणस्थिति बताइत बाह्य स्रोतक प्रश्न खुलल राखल जाए।

आनुवंशिकीक उपमान पञ्जी अभिलेखक वैज्ञानिक उपयोगक सम्भावना सुझबैत अछि; मुदा वास्तविक जीनोम-संशोधन लेल स्वतंत्र जैविक नमूना आ सहमतिक परीक्षण आवश्यक अछि। लिखित वंशजालकेँ प्रयोगशाला-सिद्ध आनुवंशिकी नहि कहल जा सकैत अछि।

“Generational time is the most common time structure in the Panji.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“Village movement may also suggest time. If a branch has a मूलग्राम in one place and later appears as वासी elsewhere, the sequence may indicate settlement movement. If a branch appears in several villages through सन्तति, अपत्य, विवाह, or दौहित्र, the spread may show social development…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“Panji and Time” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

समयगत आ वैज्ञानिक पद स्रोतक व्याख्यामे प्रयुक्त भेल अछि। सामाजिक वंशावलीकेँ जैविक नमूना-परीक्षणक प्रत्यक्ष परिणाम नहि मानल जाए; परम्परागत कालस्मृति आ जीवित पाण्डुलिपिक लेखनकाल सेहो अलग-अलग अछि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २३ — How to Decode One Entry: A Demonstration

एक प्रविष्टिक प्रदर्शन पञ्जी-पठनक न्यूनतम अनुशासन अछि: पहिने पाठसीमा, फेर व्यक्ति, तकर बाद सम्बन्धपद, आ अन्तमे सम्भावित व्याख्या। उदाहरण सफल तखन होयत जखन पाठक अपन वैकल्पिक सम्बन्ध-चित्र पुनः बना सकथि। अनुवादक स्पष्ट वाक्य आ मूल संक्षिप्त सूत्रकेँ साथ राखब अतिआवश्यक अछि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“1. अथ सरिसब ग्राम 2. देवादित्य रत्नाकरापत्य-छादन 3. प्रज्ञाकरापत्य-बनौली नम समेत 4. नितिकर सन्तति केशवापत्यदनाद गंगेश्वरापत्य गौरि शौरि कुलपति-बधवास 5. महिपाणि सन्तति-खांगुड़ गयड़ा समेत 6. ग्रहेश्वरापत्य-जोंकी 7. गणेश्वरापत्य-सकुरी 8. सोने सन्तति-कटमा ओ सकुरी” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

““Under the Sarisab village frame, the source records several ancestor-linked branch statements.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

“How to Decode One Entry: A Demonstration” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि। अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २४ — How to Decode a Village Cluster

ग्रामसमूह पढ़बामे आरम्भ आ समापनक सही पहचान पहिल शर्त अछि। लेखक चेतबैत छथि जे पुरान समूहक समापन छूटला पर अगिला नाम गलत ग्राममे मिलि जाएत। एहि विधिमे एकटा स्थानसँ सम्बन्धित सभ नामक गणना सहायक, मुदा मुख्य साक्ष्य मूल अनुक्रमित सूत्र होयत।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“The demonstration uses the pattern visible in the early village sections of the source: a cluster opened by a formula such as अथ गंगोलीग्राम and later closed by एते गंगोली ग्राम.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“A village cluster may contain title-bearing persons: महामहोपाध्याय, म.म., कविराज, वैयाकरण, पण्डित, ठाकुर, बाबू, or other forms.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“How to Decode a Village Cluster” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २५ — How to Decode a मातृक चक्र

‘मातृक चक्र’ सीधा पितृवंश नहि, मातृसम्बन्धक बहुदिशात्मक संरचना अछि। बेटी, दौहित्र, विवाहग्राम आ जन्म-सम्बन्धक पद अलग-अलग किनाराक सङ्केत दैत अछि। यदि चित्रमे सभ सम्बन्धकेँ एकहि प्रकारक रेखासँ जोड़ल जाए, तँ विवाह निषेधक वास्तविक तर्क हराएत।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“If a daughter’s son appears, the implied daughter must be recorded.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“A मातृक चक्र often depends on marriage. If a विवाह entry appears before, inside, or near the cycle, the marriage may explain the maternal connection. First and second marriage markers are especially important because each marriage may produce a different maternal network.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“How to Decode a मातृक चक्र” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक

पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २६ — How to Decode a Marriage Entry

विवाह-प्रविष्टिक व्याख्यामे विवाह कएल व्यक्तिक पहिचान आ दू घरक सम्बन्ध अलग तहपर राखल जाए। एकटा वंशसूत्र विवाहक घटनाक जानकारी दऽ सकैत अछि, मुदा विवाहक सामाजिक सहमति, महिला-स्वायत्तता अथवा वैवाहिक वर्षक सम्पूर्ण वृत्तान्त नहि। शोधार्थ प्रत्येक सम्बन्धकेँ मूल पदसँ जोड़थि।

स्त्रीक संलग्न परिवार आ ओकर स्वतंत्र जीवनवृत्तान्त अभिलेखमे अनिवार्यतः एकरूपेँ सुरक्षित नहि अछि। अतः विवाह-श्रेणीक आलोचना सामाजिक व्यवस्थाक इतिहास पर केन्द्रित रहय, व्यक्ति-चरित्र पर नहि।

विवाहक उल्लेख सामाजिक विधिकता, कुटुम्ब-सम्बन्ध आ वैवाहिक घटनाक तीन तरहक सूचना देब सकैत अछि। नियम, व्यक्तिगत घटना आ पञ्जीकारक वर्गीकरणकेँ एकहि अर्थ नहि देबाक चाही।

“A marriage entry is usually marked by विवाह, प्रथम विवाह, द्वितीय विवाह, or a related phrase such as विवाह प्रकरणम्.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“A daughter’s-son entry may be the later effect of a marriage.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“How to Decode a Marriage Entry” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २७ — How to Decode a Long Dense Passage

घन पाठक अर्थ खोलबामे तीव्र गति समस्या अछि: एकहि पाठांशमे पिता-पुत्र, विवाह, स्थानान्तरण आ अन्तर्विष्ट नव ग्रामसूत्र आयल रहि सकैत अछि। ओहि पाठकेँ व्याकरणिक टुकड़ामे बाँटि फेर सम्बन्धित संयोजन बनेबाक पद्धति आलोचनात्मक पठनक मूल बल अछि। श्रेणी बदलैत बिन्दु सभ लग मूल पाठ सुरक्षित रखब चाही।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“Direct descent and branch continuity must be separated. सुत and पुत्र generally point toward direct descent. पौत्र and प्रपौत्र give generational levels. सन्तति and अपत्य often point toward branch continuity or descendant-line attachment, not immediate father-son relation.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“A long dense passage may contain one or more marriage entries. विवाह, प्रथम विवाह, द्वितीय विवाह, and विवाह प्रकरणम् must open separate marriage-event rows.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“How to Decode a Long Dense Passage” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २८ — Creating a Panji Family Tree

वंशवृक्षक आकृति प्राचीन सूत्रक बादमे कएल दृश्य अनुवाद अछि, स्वयं मूल साक्ष्य नहि। ‘सुत’, ‘पौत्र’ आ ‘प्रपौत्र’क सूक्ष्म अन्तर बचल रहय, तथा विराम आ खाली पीढ़ी दृष्टिगोचर हो। शोधार्थ एकहि आकृति मे ‘स्पष्ट लिखल’ आ ‘अनुमानित’ रेखा अलग प्रकारेँ चिन्हित करथि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“A Panji family tree must include women structurally even when they are not personally named.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“A Panji family tree should show villages, but not all village names mean the same thing.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“Creating a Panji Family Tree” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय २९ — Creating a Village Index

ग्राम-अनुक्रमणिकामे स्रोतगत वर्तनी, सामान्यीकृत खोजरूप आ ग्रामक अभिलेखीय भूमिका अलग-अलग रखल जाए। एतय सरिसब वा उजानक पुनरावृत्ति अनेक वंशमे हो सकैत अछि, मुदा ओ सभ एकहि सामाजिक भूमिका निभबैत अछि—ई पूर्वनिर्णय नहि। सर्वाधिक उपयोगी अनुक्रमणिका ओ जे मूल प्रविष्टिक क्रमाङ्क पर घुराए।

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

“Many Panji sections begin with a frame such as अथ + village-name + ग्राम.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“Every मूलग्राम entry should include the original phrase, associated branch, related frame village, and later linked places if known.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“Creating a Village Index” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३० — Creating a Person Index

व्यक्ति-अनुक्रमणिकामे गङ्गा, केशव, माधव आ रघुनाथ सन सामान्य नाम बारम्बार आयब स्वाभाविक अछि। नाममात्र मिललासँ दू प्रविष्टिक व्यक्ति एके छथि, से सिद्ध नहि होइत। पितृनाम, समयक परत, ग्राम, शाखा आ वैवाहिक सम्पर्कक सहमति भेटला परे अभिन्नताक प्रस्ताव देल जाए।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए।

“Relationship words are the strongest aids to identification. सुत, पुत्र, सुतो, सुता, पौत्र, प्रपौत्र, सन्तति, अपत्य, दौहित्र, and other terms place a person in relation.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“If only the name matches, keep the occurrences separate.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“Creating a Person Index” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३१ — Creating a Term Glossary

अध्याय ३१–३८ : कोशक अर्थसामञ्जस्य आ मूल खण्डक अनुक्रम-नियन्त्रण

शब्दकोश, त्रुटि–पाठान्तर, अनुक्रम-नियन्त्रित गोत्र–मूलग्राम, लौकित–चौगोला–श्रेणी आ विद्वत् वंशसूत्र मूल ग्रन्थक अन्तिम आठ अध्यायकेँ एक-दोसरसँ जोड़ैत अछि। एहि खण्डक महत्त्व मात्र सूची बनबामे नहि, पञ्जी-पठनक नियम आ पाठगत असमानता पर एक संग विचार करबामे अछि। ‘अपरा’, ‘मातृक’ आ ‘ग्रामारम्भ’ सन पद एक प्रविष्टिमे जे सामाजिक सम्बन्ध दैत अछि, दोसर प्रविष्टिमे ओकर अर्थ सन्दर्भ बदलि सकैत अछि। अनुक्रमणिका एहि भेदकेँ बचाबय, नहि कि सभ शब्दक एकल अर्थ थोपय। अध्याय ३३–३८ मे स्वीकृत अनुक्रम-नियन्त्रणक बल एहि बातमे अछि जे जँ कोनो गोत्र, मूकग्राम अथवा पत्रांक प्रविष्टि अध्याय १–३२ मे व्याख्यायित नहि भेल अछि, तँ पाठककेँ पुनः प्रत्यक्ष मूल खण्डक ओर घुराओल जाए। ‘पूर्ण आवरण’ दावा तखनहि प्रमाणित होयत जखन मूल अनुक्रमक प्रत्येक प्रकरणक स्पष्ट सन्दर्भ मिलत। एतय सहायक-तालिका आ मूल प्रविष्टिक प्रमाण-स्थिति पृथक् रहनाइ अपेक्षित अछि।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए। एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

“For example, सन्तति should be linked to अपत्य, सुत, branch continuity, family tree, person index, and village clusters. विवाह should be linked to प्रथम विवाह, द्वितीय विवाह, मातृक चक्र, दौहित्र, date phrases, marriage table, and issue assignment.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 31]

“दौहित्र means daughter’s son and is one of the most important bridge terms in the Panji.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 31]

“Creating a Term Glossary” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३२ — Errors, Variants, and Editorial Discipline

एहि प्रकारक अध्याय इतिहासक घटनासँ बेसी पाठनिर्णयक नैतिकता पर प्रकाश दैत अछि। एकटा अक्षरक गलत मिलान कखनो दू अलग परिवार अथवा ग्रामक गलत सम्बन्ध बना सकैत अछि।

रिक्त, भिन्न वर्तनी, अपूर्ण अक्षर आ लिखावट-परिवर्तनकेँ स्रोतक त्रुटि मानि स्वतः भरल नहि जाए। ‘अज्ञात पाठ’ नामसँ पाठकीय सीमा निर्दिष्ट करब बनावटी पूर्णतासँ अधिक विश्वसनीय अछि।

“Abbreviations are small forms with large consequences. A short mark such as ठo, प्रo, म.म., वा., or टीप can affect identity, title, village function, marriage interpretation, chronology, and source layering. The correct method is not to expand quickly but to preserve, classify, compare, and mark…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 32]

“Learned Village Indicator — A flag used when repeated titles such as महामहोपाध्याय, कविराज, वैयाकरण, पण्डित, or ज्योतिर्विद occur in the same village context.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 32]

“Errors, Variants, and Editorial Discipline” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकेँ पिता–पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३३ — Volume II and the Khand 1 Index Protocol

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए।

“ठाकुर चन्द्रपति [महादेव (थेघ), भगीरथ (मेघ), दामोदर, महेश-महेश ठाकुरक भाए सभक नामपर अध्याय सभक सिम्बोलिक नामकरण, सभटा मूल (१६७)क वर्णन।” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 33]

“गंगोली पं. गंगाधर, गंगाधरक दू सन्तान वीर (पर्वपल्ली-पवौली) आ नारायण, नारायणक पुत्र शूलपाणि, शूलपाणिक पुत्र हाले (प्रसिद्ध साँई प्रसिद्ध संकर्षण-खण्डवला ग्रामोपार्जक), संकर्षणक छह पुत्र-भद्रेश्वर,दामोदर, वैकुण्ठ, नीलकण्ठ, श्रीकण्ठ, ध्यानकण्ठ; श्रीकण्ठक छह पुत्र-श्यामकंठ,हरिकंठ,नित्यानन्द,गंगेश्वर, हरदत्त आ हरिकेश।” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 33]

“Volume II and the Khand 1 Index Protocol” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३४ — Khand 1 Master Structure and Chapter Link Map

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“गोत्र-प्रवर युक्त मैथिल -> Chapter 37; Appendix C.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 34]

“Khand 1 Master Structure and Chapter Link Map” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३५ — गोत्र, मूल, मूलग्राम: Index-Wise Decoding

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

“वत्स (i) पाली महिषी; (ii) हरिअम्ब बलिराजपुर; (iii) घुसौत नगवाड़; (iv) करमहा रूचौलि, नरूआड़, बेहट, तरौनी, झंझारपुर, अनलपुर; (v) बुधवाल गंगोरा, डुमरा, परियाम्ब” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 35]

“Decoding rule: each row must be read as a three-layer unit: गोत्र -> मूल -> मूलग्राम.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 35]

“गोत्र, मूल, मूलग्राम: Index-Wise Decoding” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३६ — लौकित, चौगोला, श्रेणी, and पत्रांक Records

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“द्वितीय चौगोला; ११०//०५ रजौरा माण्डरसँ महादेव सुत भदाई झा; १४६//०२ डूमरा बूधवालसँ सदानन्द सुतनारायण झा; २१८//०१ भौर खण्डबला सँ रघुरामसुत बलभद्र ठाकुर; १२१//०६ मंगरौना हरि. चिकू सुत विश्वेवर मिश्र” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 36]

“द्वितीय श्रेणी; सतौली सतलखासँ हरिसुत पदूम झा १७१=५; भखरौली सकराढ़ी सँ गादू सुत श्री कान्त झा १६८=४; गौर सोदरपुरसँ बछाई सुत मधुपति मिश्र (मनियारी) ३१०=१; कटका सोदरपुरसँ सँ महिनाथ सुत बन्धु मिश्र १७५=६; महिषी बूधवालसँ परशुराम सुत बालकराम पाठक (अमौन) २३८-१; नरसाम बलियास सँ धराधर सुत…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 36]

“लौकित, चौगोला, श्रेणी, and पत्रांक Records” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३७ — विद्वान, गुरु-शिष्य, गोत्र-प्रवर, and बीजी पुरुष Records

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“पञ्जी प्रबन्ध पूर्व मध्य कालमे ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय वर्गक जाति शुद्धताक हेतु निर्मित कएल गेल । कोनो ब्राह्मणक जाति शुद्धताक हेतु उतेढ़ जानब आवश्यक छल।उतेढ़ छल सात पुरुषक परिचय, जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल-पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आ मातामह…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 37]

“१. शाण्डिल्य- दिर्घोष(दिघवे), सरिसब, महुआ, पर्वपल्ली (पवौली), खण्डबला, गंगोली, यमुशाम, करिअन, मोहरी, सझुआल, मड़ार, पण्डोली, जजिवाल, दहिभत, तिलय, माहब, सिम्मुआल, सिंहाश्रम, सोदरपुर, कड़रिया, अल्लारि, होइयार, तल्हनपुर, परिसरा, परसड़ा, वीरनाम, उत्तमपुर, कोदरिया, छतिमन, वरेवा, मछेआल, गंगौर, भटोर, बुधौरा, ब्रह्मपुरा, कोइआर, केरहिवार, गंगुआल, घोषियाम, छतौनी, भिगुआल, ननौती, तपनपुर।” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 37]

“विद्वान, गुरु-शिष्य, गोत्र-प्रवर, and बीजी पुरुष Records” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

अध्याय ३८ — Khand 1 Gramaarambh Coverage Checklist

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

“38. हवेली देशे डकरा डिहिया समीपे सम्प्रति तिरहुत देशे दहौरा राजे — Khand 1 source page: 160.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 38]

“88. देवहार सँ देवहार (जाटुकर्ण गोत्रे) मूल ग्रामारम्भ पूर्व बेसुआलवासी — Khand 1 source page: 447.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 38]

“Khand 1 Gramaarambh Coverage Checklist” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

अध्यायक शिक्षणपद्धति भविष्यमे अभिलेखीय तथ्यकोश बनबय लेल उपयोगी हो सकैत अछि; मुदा उदाहरणक पाठमे सम्बन्धसूचक एकटा शब्दो हटला पर ककरो पितृवंश अथवा मातृक सम्बन्ध गलत समझल जा सकैत अछि। एहि कारण व्याख्याक संग मूल पाँतिक रूप सुरक्षित रहनाइ चाही।

समग्र मूल्याङ्कन

दूसर मूल पुस्तक पाठककेँ सम्बन्धसूत्र, ग्रामारम्भ, गोत्र, मातृक आ वंश-चित्र बनएबाक क्रमबद्ध प्रशिक्षण दैत अछि। ओकर प्रमुख उपलब्धि ई जे एक पञ्जी-पाँतिक भीतर स्थान, व्यक्ति, वंश आ विवाहक भिन्न अवयव देखल जाएत अछि। मुदा प्रशिक्षणक उदाहरणकेँ मूल अभिलेखक पूर्ण जनगणना नहि मानल जाए।

अध्याय २३–३२मेक पुनर्निर्माण-विधि प्रयोगशील अछि; ओहि विधिक कड़ाइ तखन सिद्ध होयत जखन एकहि मूल प्रविष्टि दू स्वतंत्र पाठक पढ़थि आ व्यक्ति/सम्बन्धक असहमतिक कारण लिखित रूपेँ मिलाएल जाए।

अध्याय ३३–३८क अनुक्रम-नियन्त्रण एहने जाँचक साधन बनि सकैत अछि।

स्रोत-विवेकक मर्यादा

समीक्षा मूल ग्रन्थक अध्यायानुक्रम, शब्दप्रयोग आ व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। प्राथमिक पञ्जीक स्वतन्त्र मूल-पृष्ठ, दिनाङ्कयुक्त प्रमाण, संस्कृत/तिरहुता समांतर संस्करण, आनुवंशिक प्रयोगशालाक आँकड़ा आ अभिलेखित व्यक्तिसभक आजुक वंशजक विषयमे स्वतंत्र प्रमाणन एतय नहि कएल गेल अछि।

ग्रन्थसूची

ठाकुर, गजेन्द्र। Decoding the Panji of Mithila, Volume II।

उपलब्ध मूल ग्रन्थ-पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३६

प्राचीन पञ्जी

प्राचीन पञ्जीक ग्रामनाम, मूल, मातृक सम्बन्ध

आ विवाहक सूत्रसभक पाठ-व्याख्या।

व्यक्ति, स्थान आ वंशशाखाक सम्बन्ध

पहिचानबाक पद्धतिक समालोचनात्मक परीक्षण।

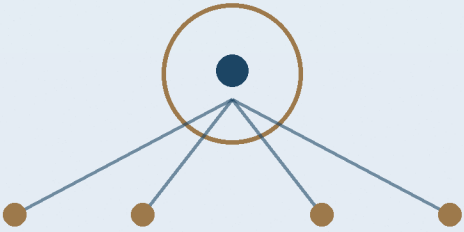

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

Videha GitHub

प्रतिलिप्याधिकार २०२६ : गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर